है कि उनसे मुक्ति की आकांक्षा का अर्थ क्या होता है।"[1]

इलियट के इस सिद्धान्त को ही 'निर्वैयक्तिकता' (Depersonalization) का सिद्धा कहा जाता है। उसने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन रोमैंटिक कवियों की व्यक्तिवादिता के विरो में किया। साथ ही, इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के माध्यम से उसने काव्य-सिद्धान्त को वैज्ञानि बनाने की कोशिश की। उसने कवि के मन की तुलना प्लेटिनम के तार से की। उसने क कि यदि 'आक्सीजन' और 'सल्फर' डायोक्साइड' के कक्ष में प्लेटिनम का एक तार डाल दि जाय तो आक्सीजन और सल्फर डायोक्साइड मिलकर सल्फ्यूरस एसिड (Sulphurou acid) बन जाते हैं किन्तु इस सल्फ्यूरस एसिड में प्लेटिनम का कोई चिह्न दिखाई नहीं देत प्लेटिनम का तार भी पूर्णतः अप्रभावित रहता है। इसी प्रकार कवि के मन के संपर्क में आने प्रकार के संवेदन, अनुभूतियाँ और भाव आते हैं और नये-नये रूप ग्रहण करते रहते हैं कि प्रौढ़ कवि का मन अप्रभावित रहता है। वास्तविकता यह है कि रचनाकार जितना ही प्रौढ़ और परिपक्व होगा उसमें भोक्ता और स्रष्टा व्यक्तित्व का अंतर उतना ही स्पष्ट होगा। अर्थात् उस अनुभूत संवेदन और भावों से उसके द्वारा रचित काव्य में व्यक्त भाव और संवेदन उतने भिन्न होंगे।

इलियट द्वारा प्रतिपादित **'वस्तुनिष्ठ समीकरण'** (Objective correlative) का सिद्धान्त भी विशेष महत्व का है। 'वस्तुनिष्ठ समीकरण' से तात्पर्य है 'भावानुकूल आलम्ब विधान'। इलियट यह मानता है कि प्रत्येक भाव की प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है कि कवि ऐसी वस्तुओं, स्थितियों, या घटनाओं का चयन करे जो भाव-विशेष को उद्दीप्त एवं जागृत करने के लिए उचित आलम्बन का काम कर सकें। इलियट के इस **'वस्तुनिष्ठ समीकरण'** सिद्धान्त की तुलना भारतीय रस-सिद्धान्त के **विभावन-व्यापार** से की जा सकती है। इस सम्बन्ध में डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा का कथन है– "इलियट का यह 'मूर्त-विधान' (Objective correlative) भारतीय रस-सिद्धान्त का विभावन-व्यापार है। कविगत भाव की अभिव्यक्ति का अनिवार्य साधन है 'विभाव'। इलियट का मूर्त-विधान भाव के उद्‌बोधन मात्र तक सीमित है किन्तु रस-सिद्धान्त में भाव के उद्‌बोध का ही नहीं, उपचय (बृद्धि) का भी महत्व स्वीकार किया गया है। इसलिए विभाव के दो भेद माने गए हैं– आलम्बन तथा उद्दीपन। आलम्बन भाव को उद्‌बुध करता है और उद्दीपन उसे उपचित करता है। रस-निष्पत्ति के लिए भाव का उद्‌बोध मात्र पर्याप्त नहीं है; उसका उपचय भी आवश्यक है। अतः विभावन-व्यापार में

---

1. "Poetry is not a turning loose of emotion, but an excape from emotion, it is not expression of personality but escape from personality. But of course, only those who have personality and emotions know what itmeans to want to escape from these things." — *The Sacred Wood - P.58*

Scanned by CamScanner

आलम्बन-विभाव के साथ उद्दीपन-विभाव की भी उपादेयता है। इलियट के मूर्त-विधान (Objective correlative) की तुलना में रस-सिद्धांत का 'विभावन-व्यापार' कहीं अधिक व्यापक और परिमार्जित है।'

इलियट ने 'काव्य-भाषा', 'काव्य का संगीत', 'काव्य और नैतिकता' आदि विषयों पर भी विचार किया है किन्तु यहाँ हम उसकी प्रमुख स्थापनाओं और सिद्धान्तों तक ही अपने को सीमित रखना चाहेंगे।

अंग्रेजी के बीसवीं शती के कवि समीक्षकों में इलियट का स्थान अन्यतम है। उन्होंने अंग्रेजी की व्यावहारिक समीक्षा को न केवल समृद्ध किया वरन् उसे नई दिशा प्रदान की। उन्होंने अभिजातीय संस्कारों को नये संदर्भ में प्रतिष्ठित किया। सिद्धान्त ग्रंथों की रचना न करते हुए भी उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को प्रतिष्ठित किया। आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन को ध्यान में रखकर उन्होंने काव्य को नई भूमि पर प्रतिष्ठित किया। एक समीक्षक के रूप में उन्होंने साहित्य की जीवंत परंपरा के संरक्षण पर बल दिया। रुचियों के परिष्कार को आवश्यक माना और साहित्य के बोध और आस्वाद की महत्ता स्पष्ट की। आलोचना की समृद्धि के लिए उन्होंने तुलना और विश्लेषण को अनिवार्य माना। इलियट ने श्रेष्ठ आलोचक के लिए सहृदयता के साथ ही व्यापक अध्ययन, और स्पष्ट विश्लेषण-क्षमता जैसे गुणों को भी आवश्यक माना। सब मिलाकर उन्होंने अंग्रेजी समीक्षा को अधिक से वस्तुनिष्ठ और विशद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

Scanned by CamScanner

प्रचलित है, व सुंदर या असुंदर [illegible] से होता है, अर्थात् इससे कि उनके आगे-पीछे कौन से शब्द आये हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र में रीति के अंतर्गत इसी का विचार हुआ है। प्रकरण (context) और अर्थ (meaning) का प्रभाव भी काव्य-संगीत पर पड़ता है।[61] इस अंश में इलियट और रिचर्ड्स के विचारों में समता है। सभी शब्दों में एक जैसी समृद्ध व्यंजकता नहीं होती। अतः कवि का कर्त्तव्य है कि वह समृद्ध व्यंजकता वाले शब्दों को चुने और असमृद्ध व्यंजकता वाले शब्दों में समृद्धि लाने की चेष्टा करे।

मूर्त-विधान
(Objective Correlative)

कवि जब काव्य रचना में प्रवृत्त होता है तो उसके मूल में प्रेरक भाव कोई एक ही रहता है। किंतु बाद में अनेक भाव, संवेदन तथा विचार परस्पर मिलने लगते हैं और काव्य की परिणति या समाप्ति होते-होते न जाने उसमें कितने भावों, संवेदनों तथा विचारों का सम्मिश्रण एवं विलयन (fusion) हो चुका होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाव, संवेदन तथा विचार— ये सभी अमूर्त हैं। अमूर्त का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता और भावक को अप्रत्यक्ष की अनुभूति नहीं हो सकती। अतः प्रश्न यह है कि इन्हें अनुभूति के योग्य कैसे बनाया जाये, अर्थात् कवि के मन से भावक के मन तक इनका संप्रेषण कैसे हो? एक ओर कवि है, दूसरी और भावक है— दोनों में कोई संबंध-सूत्र नहीं है। फिर भी, कवि की भाव-संपदा को भावक के मन में यथावत उतारना है। कोई ठोस चीज होती तो यहां से उठाकर वहां रख देते, किंतु चीज है बिल्कुल अमूर्त। इस अमूर्त को भावक तक कैसे पहुंचाया जाये?

इसी प्रश्न का समाधान करने के लिए इलियट ने मूर्त-विधान का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। अमूर्त का संप्रेषण नहीं हो सकता, यह सिद्ध है। ऐसी स्थिति में एक ही उपाय है कि किसी मूर्त वस्तु की सहायता से अमूर्त को संप्रेषित किया जाये।

''कला के रूप में भाव को अभिव्यक्त करने का एक ही उपाय है और वह

Scanned by CamScanner

है—किसी सह-संबंधी वस्तु (objective correlative)—जैसे वस्तु-समुदाय, परिस्थिति, घटना-शृंखला को ढूंढ़ निकालना, जो उस **विशिष्ट** भाव का सूत्र हो। ऐसा सूत्र कि जब वे बाह्य वस्तुएं प्रस्तुत की जाये तो ऐंद्रिय अनुभूति में अवसित होकर वे भाव को सद्यः उद्‌बुद्ध कर दें।"[62]

इलियट का यह सूत्र व्याख्या-सापेक्ष है :

1. भाव अमूर्त होता है। अतः उसकी अभिव्यक्ति किसी मूर्त वस्तु की सहायता से ही संभव है।

2. जिस किसी वस्तु से जिस किसी भाव की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। अभिव्यंग्य भाव और अभिव्यंजक वस्तु में ऐसा संबंध होना चाहिए कि उस वस्तु से वह भाव अभिव्यक्त हो सके। यहां वस्तु शब्द से वैसी वस्तु अभिप्रेत है जो एक ओर तो कवि के भाव को अभिव्यक्त करे और दूसरी ओर भावक के मन में तत्सदृश भाव उत्पन्न करे।

3. इस तरह की मूर्त-विधान का कोई निश्चित रूप या प्रकार नहीं है। या तो प्रकृत भाव से संबद्ध कोई वस्तु-समुदाय हो सकता है, या कोई परिस्थिति हो सकती है, या कोई घटना-शृंखला हो सकती है।

4. उपरिनिर्दिष्ट बाह्य वस्तुओं की सहायता से भावक के मन में वैसे ही भाव उद्‌बुद्ध होते हैं जैसे कवि के मन में उत्पन्न हुए थे। तात्पर्य यह कि बाह्य वस्तुएं कवि और भावक के बीच भाव-तादात्म्य स्थापित करने में माध्यम का काम करती हैं। उन्हीं के द्वारा कवि और भावक एक भाव-भूमि पर मिलते हैं।

वस्तु-योजना अर्थात् मूर्त-विधान का यह सिद्धांत इलियट की मौलिक उद्‌भावना नहीं है। इसका पहले-पहल संकेत अरस्तू ने अपने काव्यशास्त्र में किया है। बाद में फ्रांसीसी प्रतीकवादियों (symbolists) ने भी अपने काव्य में इस पद्धति का आश्रय लिया। संभवतः प्रतीकवादियों से प्रेरणा ग्रहण करके ही इलियट ने इस सिद्धांत को प्रतिपादित किया, हालांकि दोनों में थोड़ा अंतर है। जहां प्रतीकवादी वस्तु की सटीकता (precision) के बदले उसकी व्यंजकता (suggestiveness) को अधिक महत्त्व देते हैं, वहां इलियट वस्तु की व्यंजकता के बदले उसकी सटीकता को अधिक महत्त्व देते हैं। वस्तु की **सटीकता** और **व्यंजकता** अभिमत हैं दोनों को, अंतर केवल बल का है।

इलियट का यह मूर्त-विधान (objective correlative) भारतीय रस सिद्धांत का विभाजन-व्यापार है। कविगत भाव की अभिव्यक्ति का अनिवार्य साधन है—विभाव। इलियट का मूर्त-विधान भाव के उद्‌बोधमात्र तक सीमित है किंतु रस सिद्धांत में भाव के उद्‌बोध का ही नहीं, उपचय (बुद्धि) का भी महत्त्व स्वीकार किया गया है। इसीलिए विभाव के दो भेद माने गये हैं—आलंबन तथा उद्‌दीपन।[63] आलंबन भाव को उद्‌बुद्ध करता है और उद्‌दीपन उसे उपचित करता है। रसनिष्पत्ति

Scanned by CamScanner

के लिए भाव का उद्‌बोधमात्र पर्याप्त नहीं है, उसका उपाय भी आवश्यक है। अत: विभावन-व्यापार में आलंबन विभाव के साथ उद्‌दीपन विभाव की भी उपादेयता है। इलियट के मूर्त-विधान की तुलना में रस सिद्धांत का विभाजन-व्यापार कहीं अधिक व्यापक और परिमार्जित है।

मूर्त-विधान (objective correlative) का प्रयोग इलियट ने शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक हैमलेट की आलोचना के प्रसंग में किया है। इलियट की दृष्टि में हैमलेट असफल रचना है, क्योंकि इसमें भाव का समुचित संप्रेषण नहीं हो पाया है और इसका कारण यह है कि हैमलेट की संवेदनाओं तथा अनुभूतियों के संप्रेषण के लिए जैसा मूर्त-विधान अपेक्षित है, वैसा नाटक में हो नहीं पाया है। "यह कलात्मक अनिवार्यता है कि बाह्य वस्तु भाव के पूर्ण अनुरूप हो।"[64] अर्थात् कलात्मक दृष्टि से यह अनिवार्य है कि भाव की अभिव्यक्ति के लिए जैसा मूर्त-विधान अपेक्षित है वह वैसा ही हो, उसमें कोई कमी या त्रुटि न हो। यदि कमी या त्रुटि होगी तो भाव की सम्यक अभिव्यक्ति नहीं हो पायेगी और अनुपातत: रचना सदोष हो जाएगी। मूर्त-विधान (objected correlative) का सिद्धांत इलियट की एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक देन है।

संवेदनशीलता का असाहचर्य
(Dissociation of Sensibility)

मूर्त-विधान (objective correlative) के समान संवेदनशीलता का असाहचर्य (dissociation of sensibility) भी इलियट की बहुचर्चित एक दूसरी अवधारणा है।

इलियट का कहना है कि महान कवि और महान काव्य में भाव और विचार का, भावुकता और बौद्धिकता का, वैयक्तिकता और परंपरा का, समकालिकता और शाश्वतता का समन्वय रहता है। इनमें किसी एक पक्ष के कमजोर पड़ने या उपेक्षित होने पर काव्योत्कर्ष खंडित होता है। तात्पर्य यह कि कवि की महत्ता उसकी संदृष्टि (vision) की व्यापकता पर निर्भर करती है। कोलरिज के समान इलियट भी काव्य में

Scanned by CamScanner